दिनान्तिका

शांतिनिकेतन में चाय-चक्र के पुरोधा दिनेन्द्रनाथ ठाकुर की याद में, 1939 ई. में अष्टकोण युक्त इस चाय-गृह का निर्माण हुआ। इस गृह में नन्दलाल बसु सहित कलाभवन के छात्रों द्वारा बनाया गया भित्तिचित्र है। यहाँ पुराने दिनों में विश्वभारती के शिक्षकगण और कर्मचारी चाय के लिए सम्मिलित होते थे।

चीन भवन

चीन भवन की स्थापना 1937 में हुई थी। यह चीनी साहित्य और संस्कृति के प्रमुख केंद्रों में से एक है। इस भवन की लाइब्रेरी विभिन्न अनमोल पुस्तकों और पांडुलिपियों से समृद्ध है। यह भवन चीनी विद्वान तान यून शान द्वारा रवींद्रनाथ ठाकुर की इच्छानुसार बनाया गया था। इस भवन में नंदलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखोपाध्याय, प्रोबोध सेन जैसे कलाकारों द्वारा दीवार चित्र और स्टुको पेंटिंग्स बनाई गई हैं।

रवींद्रनाथ टैगोर की मुहर और हस्ताक्षर

हिंदी भवन

यह हिंदी भाषा और साहित्य के प्रमुख केंद्रों में से एक है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस भवन का उद्घाटन 31 जनवरी 1939 को किया था। हिंदी भवन बी.एम. हलवासिया ट्रस्ट की सहायता से बनाया गया था। लंबे समय तक यह एकमात्र इमारत थी। इस इमारत के पहले तल के एक बड़े कमरे में कलाकार बिनोद बिहारी मुखर्जी ने मध्यकालीन भारत के संतों की जीवनी चित्रित की थी। यह उनके कलात्मक जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

विश्वभारती 'हेरिटेज सेल' द्वारा प्रकाशित।
सूचना, चित्र और लेआउट – रवीन्द्र भवन।
© विश्वभारती 2025।

SANTINIKETAN HERITAGE WALK

छातिमतला

छातिमतला महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर का ध्यान स्थल है। वे पहली बार इस स्थान पर लगभग मार्च 1862 में आए और छातिम के दो वृक्षों के नीचे ध्यान किया। बाद में, वहां एक वेदी बनाई गई।

शांतिनिकेतन-गृह

यह शांतिनिकेतन का प्राचीनतम गृह है। 1858-1863 के बीच में इस गृह का निर्माण हुआ था। 1873 में महर्षि देवेन्द्रनाथ के साथ बालक रवीन्द्रनाथ पहली बार इस गृह में आये। इसके बाद अपने जीवन में विभिन्न समय में वे यहाँ रहे थे। उनकी कई विख्यात साहित्यिक कृतियों की रचना भी यहाँ हुई थी। दीर्घकाल तक अतिथिशाला के रूप में व्यवहृत इस गृह में महात्मा गाँधी के अतिरिक्त कई विख्यात व्यक्ति यहाँ आ कर रहे थे। 'उपासना-गृह' के निर्माण के पूर्व देवेन्द्रनाथ और उनके अनुयायीगण 'शांतिनिकेतन-गृह' के एक कक्ष में उपासना करते थे। यही शांतिनिकेतन का एकमात्र ऐसा गृह है जहाँ रवीन्द्रनाथ की पत्नी के अतिरिक्त उनके पुत्र और कन्यायें यहाँ रही थीं।

विश्वभारती

शांतिनिकेतन
आश्रम परिक्रमा
विश्वभारती

महर्षि छातिमतला पर रवीन्द्रनाथ

उपासना गृह

उपासना गृह

1890 में ब्रह्ममंदिर के रूप में इस उपासना-गृह का शिलान्यास द्विजेंद्रनाथ ठाकुर के हाथों हुआ। मंदिर की स्थापना के आदर्श के संबंध में सत्येंद्रनाथ ठाकुर ने भाषण दिया एवं रवीन्द्रनाथ ने ब्रह्मसंगीत गाकर सुनाया। 1891 के 21 दिसंबर को नवनिर्मित इस गृह का उद्घाटन हुआ। उस दिन भी रवीन्द्रनाथ उपस्थित थे। नाना रंगों के काँच से निर्मित इस गृह में कोई खिड़की नहीं है, केवल दरवाजे हैं। फर्श मार्बल पत्थर से बनाया गया है। जाति, धर्म निर्विशेष समस्त मनुष्य के लिए इस उपासना-गृह का द्वार उन्मुक्त है। प्रति बुधवार के अतिरिक्त यहाँ सारे वर्ष विभिन्न समय विशेष उपासना होती रहती है।

तालध्वज

एक ताड़ वृक्ष को केन्द्रित कर फूस की छत वाले, गोलाकार, मिट्टी के इस कुटीर में ब्रह्मचर्याश्रम विद्यालय के शिक्षक तेजेशचंद्र सेन रहते थे। रवीन्द्रनाथ के 'वनवाणी' काव्यग्रंथ की 'कुटीरवासी' कविता इस कुटीर तथा तेजेशचन्द्र सेन की स्मृति को वहन करती है।

नतुन बाड़ी

सपरिवार रहने के लिए रवीन्द्रनाथ ने 1902 में इस गृह का निर्माण कराया। निर्माण कार्य समाप्त होने के पहले ही उनकी पत्नी मृणालिनी देवी का निधन हो गया। इस गृह में महात्मा गाँधी, कस्तूरबा गाँधी और दक्षिण अफ्रीका के फिनिक्स विद्यालय के छात्रों ने निवास किया था। ब्रह्मचर्याश्रम के शिक्षकों के आवास के रूप में भी इस गृह का उपयोग हुआ है।

देहली

देहली

1904 में 'देहली' का निर्माण कार्य शुरू हुआ। 1906 से रवीन्द्रनाथ इस गृह में निवास करने लगे। उत्तरायण में रवीन्द्रनाथ के निवास के पूर्व 'देहली ही कवि का प्रधान निवास स्थल था। वर्तमान में यह गृह शिशु विद्यालय मृणालिनी आनंद पाठशाला का मूल भवन है।

संतोषालय

विद्यालय के कनिष्ठ शिशुओं के लिए 1921 में इस छात्रावास का निर्माण हुआ। शांतिनिकेतन के प्रारंभिक छात्र एवं बाद में यहाँ के शिक्षक संतोषचन्द्र मजुमदार की स्मृति में इसका नामकरण हुआ 'संतोषालय'। खपरैल की छतवाले इस एकमंजिले गृह में नन्दलाल बसु, विनोद बिहारी मुखोपाध्याय सहित उस समय के कई विशिष्ट कलाकारों द्वारा निर्मित भित्तिचित्र हैं।

घंटातला

1919 में सुरेन्द्रनाथ कर की परिकल्पना के अनुसार प्राचीन बौद्ध तोरण के अनुरूप इस घंटातला का निर्माण हुआ। इस निर्माण के लिए रानू अधिकारी ने अपनी छात्रवृत्ति की राशि आश्रम को दान कर दिया। घंटाध्वनि के माध्यम से कक्षा तथा विभिन्न अनुष्ठानों के आरंभ और समाप्ति की सूचना का निर्देश होता है।

पूर्व तोरण

सिंह सदन के दाँये, विद्यालय परिसर के प्रवेश-तोरण की तरह यह गृह सुरेन्द्रनाथ कर की स्थापत्य कला का नमूना है। एक जमाने में यह विद्यालय के छात्रावास एवं शिक्षकों के निवास के रूप में व्यवहृत होता था।

पश्चिम तोरण

सिंह सदन के बाँये, विद्यालय परिसर के प्रवेश-तोरण की तरह ये गृह सुरेन्द्रनाथ कर की स्थापत्य कला का नमूना हैं। एक जमाने में ये विद्यालय के छात्रावास एवं शिक्षकों के निवास के रूप में व्यवहृत होते थे।

सिंहसदन

रायपुर के जमींदार लार्ड सत्येन्द्र प्रसन्न सिंह द्वारा प्रदत्त धनराशि द्वारा यह गृह निर्मित हुआ इसलिए उनके सम्मान में इसका नाम 'सिंहसदन' रखा गया। 1924 से 1927 के बीच इसका निर्माण हुआ। इस गृह की दीवारें, खिड़की और इसके शिखर की निर्माण कला विशेष रूप से लक्षणीय है। अद्वितीय गठन कला से युक्त इस गृह की परिकल्पना सुरेन्द्रनाथ कर के द्वारा हुई। 1940 में 7 अगस्त के दिन इसी गृह में एक विशेष दीक्षांत समारोह के द्वारा रवीन्द्रनाथ ठाकुर को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की डी.लिट. साम्मानिक उपाधि प्रदान की गयी थी। वर्तमान में विभिन्न सभा के काम से इस गृह का उपयोग होता है।

पाठ भवन

पाठ भवन

पाठ-भवन शांतिनिकेतन के प्राचीनतम गृहों में से एक है। पहले यहाँ विश्वभारती का केन्द्रीय पुस्तकालय था। 1899 में इसकी पहली मंजिल का निर्माण हुआ। रवीन्द्रनाथ के भतीजे बलेंद्रनाथ ठाकुर ने यहाँ एक ब्रह्मविद्यालय स्थापित करना चाहा था। किन्तु अकाल मृत्यु से उनकी इच्छा पूर्ण न हो सकी। यहीं 1901 में रवीन्द्रनाथ ने केवल पाँच छात्रों के द्वारा ब्रह्मचर्याश्रम विद्यालय की शुरूआत की। नन्दलाल बसु एवं उनके सहयोगियों द्वारा अंकित दीवालचित्र इस भवन में है। वर्तमान में यहाँ पाठ भवन का दफ्तर है।

सिंहसदन